Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 16, Issue No. 2, February-2019, ISSN 2230-7540

वृंदावनलाल वर्मा के ऐतिहासिक उपन्यासों में नारी पात्र

Sunil Kumar*

Village & Post – Khanda Kheri, Hisar

शोधसार – *हिन्दी साहित्य में ऐतिहासिक विवरणों का वर्णन मिलता है। इनमें अलग-अलग पुरुष एवं नारी पात्र मिलते हैं, जिनकी महिमा के बारे में बताया गया है। मनुष्य के भीतर जो मधुर मनोरम भावनाएँ अस्पष्ट रूप में बिखरी रहती है, उन्हीं का सुनियोजित सुस्पष्ट संगठन अथवा भावनाओं का दृश्यीकरण सौन्दर्य है। देश, काल और संस्कार के अनुरूप प्रत्यक्ष सौन्दर्य के प्रतिमान भिन्न-भिन्न हो सकते हैं, पर उसके आनन्ददायक प्रभाव के विषय में दे मत नहीं हो सकते। यही कारण है कि कालिदास को शकुन्तला और शेक्सपीयर की मिरांडा नखशिख में भिन्न होते हुए भी प्रेम, पवित्रता और मंजुलता की मूर्तियाँ है। भारतीय संस्कृति में रूप को चेतना का उज्ज्वल वरदान मानकर उसके मंगल विधायक प्रभाव का अनिवार्यतः विधान कर दिया गया है। यहाँ शिव और सुन्दर में कोई अंतर नहीं किया गया। हिन्दी साहित्य में नारी को विभिन्न रूपों में वर्णित किया गया है। वृंदावनलाल जी ने अपने ऐतिहासिक उपन्यासों के लिए झांसी की रानी, मृगनयनी, महारानी दुर्गावती, अहिल्याबाई और रायगढ़ की रानी जैसे पात्रों का चुना है। इन्हीं का वर्णन प्रस्तुत शोध-पत्र में किया गया है।*

मुख्य शब्दः- *ऐतिहासिकता, सौन्दर्य, उपन्यास, सहजता आदि।*

----------X----------

वृंदावनलाल वर्मा के नारी पात्र

वृंदावनलाल वर्मा के उपन्यासों में नारी पात्र प्रबल और प्रधान है। वर्मा जी की अपने आदर्श नारी पात्रों के विषय में एक धारणा है, स्त्री के भौतिक सौन्दर्य और बाह्य आकर्षण तक वह सीमित नहीं रह जाते, उसमें दैवी गुणों को देखना उन्हें भला लगता है। नारी के बाह्य सौन्दर्य और लावण्य के परे उसमें निहित आंतरिक तेज की खोज तथा उसके बाह्य और आंतरिक गुणों में सामंजस्य स्थापित करना उनका लक्ष्य रहता है। उनकी यह नारी पुरुष से कहीं ऊँची है। उनकी दृष्टि में पुरुष शक्ति है तो नारी उसकी संचालक प्रेरणा। प्रारम्भ के उपन्यासों में नारी विषयक उनकी धारणा अधिक कल्पनामय तथा रोमांटिक रही है। वह प्रेयसी के रूप में आती है, प्रेमी के जीवन लक्ष्य की केन्द्र और उसकी पूजा-अर्चना की पावन प्रतिमा बनकर। तारा (गढ़ कुंडार) तथा कुमुद (विराटा की पद्मिनी) उपन्यासकार की इसी प्रारम्भिक प्रवृत्ति की देन है। अगले उपन्यासों में लेखक की प्रौढ़ धारणा कल्पनाकाश की उड़ानों से भर कर संघर्षमयी इस कठोर पर उतर आती है। ये नारी पात्र पुरुष पात्रों को प्रेरणा ही नहीं देते, संसार के संघर्षों में स्वयं जूझते हुए अपनी शक्ति का भी परिचय देते हैं। कचनार (कचनार), मृगनयनी तथा लाखी (मृगनयनी), रूपा (सोना) और नूरबाई (टूटे काँटे) ऐसे ही पात्र है। लक्ष्मीबाई (लक्ष्मीबाई) तथा अहिल्याबाई (अहिल्याबाई) में ये गुण अपने चरम पर दीख पड़ते हैं।

वर्मा जी द्वारा चित्रित नारी के कुछ अन्य रूप उल्लेखनीय है। ईर्ष्यालू प्रेमिका उजियारी (प्रेम की भेंट), आकांक्षामयी गोमती (विराटा की पद्मिनी), लालसा की लहरों में अठखेलियाँ करती कुन्ती (अचल मेरा कोई), धन तथा शारीरिक सुख की लोलुप अंजना (अमरबेल) तथा कर्कशा रोनी (टूटे कांटे) नारी चरित्र के विभिन्न पक्षों पर प्रकाश डालती है। इन उल्लिखित चरित्रों का सूक्ष्म विश्लेषण वर्मा जी की नारी-चित्रण कला पर यथेष्ट प्रकाश डाल सकेगा।

सौन्दर्य के संसार में नारी-सौन्दर्य इतना कमनीय है कि सांसारिक समस्त अन्तता उसी से समुद्भूत है। उसकी बाह्य रूपाकृति जितनी आकर्षक होती है, उतनी ही आह्लादक भी। साथ ही साथ उसकी अन्तःप्रकृति अत्यन्त चित्ताकर्षी होती है।

नारी की बाह्य रूपवर्णन के अन्तर्गत उसके अंग-प्रत्यंग, वेशभूषा, अनुलेपन एवं अनुभावों का वर्णन व्यापक रीति से किया जाता है। अंगों के वर्णन में उसकी स्निग्धता, गठन,

www.ignited.in

सुघड़ता, सुडौलता, मृदुलता और सुकुमारता, पुष्टता तथा आयु, वर्ण, कद, स्वास्थ्य आदि का वर्णन होता रहा है।

नारी के आंतरिक रूप के अंतर्गत उसके शील आदि का वर्णन किया। नारी पात्रों के बाह्य रूपों का कुछ पृष्ठों में वर्णन करना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। फिर भी हम प्रयास अवश्य करेंगे कि उनके उपन्यासों में चित्रित नारी पात्रों के स्थिर रूप का वर्णन सफलतापूर्वक कर सकें-

'गढ़ कुम्हार' उनका प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास है। 'गढ़ कुम्हार' का पुरुष पात्र नाग हेमवती के रूप को देखकर अभिभूत हो जाता है, तथा वह सोचता चला जाता है-

"कोमल अंग है, उछलती हुई बड़ी आखें हैं, सोने का रंग है, गरबीली ठोडी, सीधी नाक है। मैंने मुस्कुराते हुए भी देख लिया है। सौन्दर्य? अपूर्व सौन्दर्य है और हाथ में तलवार और तीर कमान?"1

"बड़ी-बड़ी आँखें, लम्बे-लम्बे पलक, मृदुल तिरछी चितवन, उसकी आँखों में समा गई।"2

"ललितादित्य" उपन्यास में कमलावती के निकट खड़ी एक सखी राजा ललितदित्य के शुभागमन पर आरती का थाल लिए आती है, जिसे देखकर ललितादित्य उसकी ओर आकृष्ट हो उठते हैं, यह सखी कोई और नहीं, चक्रमद्रिका थी-

"आरती का थाल कमलावती की एक सखी लाई। नवयुवती, बहुत निखरे गोरे रंग की, आकृति बड़ी सुन्दर, जैसे सांचे में ढाली गई हो। आँखें बड़ी और मदमाती।" 3

"देवगढ़ की मुस्कान" की नारी पात्र तिनकी सांवले रंग की नवयुवती थी, देखने में सुन्दर।"

"रंग सांवला, आँखें बड़ी-बड़ी, नाक सीधी, जैसे सहरियों की प्रायः नहीं होती थी।"

उपन्यास की हिमानी अपना परिचय बिना किसी लाज संकोच के कुछ इस प्रकार देती है-

"उसकी भूरी आँखें लाल हो गई और भौंहें वैसे ही तनी हुई, बीच की सिकुड़न उतनी ही गहरी। नाक का नथुना जरा ऊपर खिच गया।"4

एक अन्य स्थल पर वर्मा जी ने भुवन और हिमानी के रूप का तुलनात्मक वर्णन किया है।5

'कचनार' उपन्यास में रानी कमलावती तथा उनकी दोनों सखियों ललिता और कचनार का रूप द्रष्टव्य है-

"दुलहिन घूंघट खोले थी। गेहुएँ से जरा ज्याद गौर, आंखें बड़ी, बरौनिया लम्बी, नाक सीधी, चेहरा गोल। देखते ही उसने मुस्कुराकर घूंघट डाल लिया। दोनों सहेलियों ने माथा जरा ढक लिया। एक सहेली खरे गोरे रंग की और बहुत सुन्दर। दूसरा जरा सांवले रंग की, आंख बड़ी, परन्तु नाक कुछ चपटी, नथुने फूले हुए।"6

एक अन्य स्थल पर कचनार का रूप-सौन्दर्य द्रव्टव्य है-

"उठे घूंघट के नीचे से दलीप सिंह नेउसकी सुडौल, गर्दन, गोरी ठोडी और कमल के रंग जैसे ओंठ देखे। . . . बड़े-बड़े नेत्र, लम्बी बरौनिया, कन्दर्प-कमान सी भौंहें। उन्नत ललाट का निचला हिस्सा दमकता हुआ।"7

कचनार का रूप इस से भी स्पष्ट किया जा सकता है- "दुलैया जू का स्वर सारंगी सा मीठा है, कचनार का कण्ठ मीठा होते हुए भी चिनौठी सा देता हुआ। दुलैया पर कमल है, कचनार कंटीला गुलाब। जिस समय दुलैया जू को हल्दी लगाई गई मुखड़ा सूरमुखी ला लगता था। उनकी आंखों में मद था, कचनार की आंखें ओले सी सफेद और ठंडी।

'महारानी दुर्गावती' उपन्यास के प्रारम्भ में ही कुछ गोंड स्त्रियों के साथ रामचेरी का रूप-सौन्दर्य द्रष्टव्य है-

"नारियों के समूह में गोंड स्त्रियां अधिक थीं। सांवली सलोनी, ठिगने कद की पुष्टकाय। उनकी भीड़ में कुछ गोरी, लम्बी छरहरी भी थीं। एक बड़ी आंखों, सीधी नाक और सबल शरीर वाली युवती थी जो अगल-बगल की स्त्रियों में से निकलकर मृत बाघ को अधिक निकट से देखने का प्रयास कर रही थी।"8

'विराटा की पद्मिनी' उपन्यास की नायिका कुमुद चट्टान पर टेक लगाए खड़ी है। उस समय का द्रष्टव्य है-

"उन्नत भाल मोतियों की तरह भासमान था। बड़े-बड़े काले नेत्रों की बरौनियां भौहों के पास पहुँच गई थी। आंखों से झरती हुई प्रभा ललाट पर से चढ़ती हुई उस निर्जन स्थान को आलोकित सा करने लगी।"9

"कुमुद चट्टान की टेक पर खड़ी हो गई। ऐसा जान पड़ता है मानों कमलों का समूह उपस्थित हो गया हो। जैसे प्रकाश पुंज खड़ा कर दिया गया हो। पैरों की पैंजनी पर सूर्य की स्वर्ण

www.ignited.in

रेखाएँ फिसल रही थी। पीली धोती मंद पवन के धीमे झोकों से दुर्गा की पताका की तरह धीरे-धीरे लहरा रही थी। उन्नत भाल मोतियों की तरह भासमान था। बड़े-बड़े काले नेत्रों की बरौनियाँ भौहों के पास पहुँच गई थी। आंखों से झरती हुई प्रभा ललाट पर से चढ़ती हुई उस निर्जन स्थान को आलोकित सा करने लगी। आधे खुले हुए सिर पर से स्वर्ण को लजाने वाली बालों की एक लट गर्दन के पास जरा चंचल हो रही थी।"10

'गढ़ कुम्हार' उपन्यास की नारी पात्र तारा के रूप है, गुण है- "तारा विष्णु दत्त की लड़की थी। अग्निदत्त और तारा जुड़वें थे। सूरत-शक्ल बिल्कुल एकदूसरे से मिलती थी। केवल अंतर यह था कि अग्निदत्त के गोरे रंग में, बाहर घूमने-फिरने के कारण, सांवलेपन की जरा-सी पुट आ गई थी। तारा का रंग निखरा हुआ था। एक-सी आँखें, एक-सी नाक, एक-सी चेहरे की बनावट। स्वर में भी अधिक अंतर नहीं था, हाथों में जरूर अंतर था। भाई के हाथ की अंगुलियाँ मोटी थीं और पंजा चैड़ा था। बहन की अंगुलियाँ भी पतली और पहुँचा मुंदे हुए कमल-सदृश।

ऊपर से देखने में उन दोनों के नेत्रों में कोई अंतर नहीं दिखलाई पड़ता था। परन्तु बारीकी से देखने पर यह भान होता था कि अग्निदत्त की आँखों में चंचलता और ढिठाई है।"

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर कहा जा सकता है कि वर्मा जी के उपन्यासों में नारी के बाह्य सौन्दर्य का विस्तृत वर्णन हुआ है। नारी के स्थिर सौन्दर्य में स्वाभाविकता एवं सहजता हर प्रसंग में परिलक्षित होती है। जैसा कि हम पहले कह चुके हैं कि नारी के स्थिर रूप का आधार उसकी बाह्य आकृति, अंग एवं अंगों की विशेषता ही है। वर्मा जी ने स्त्री के बाह्य सौन्दर्य का वर्णन करते हुए उसके प्रायः सभी अंगों का वर्णन किया है। उपर्युक्त अध्ययन से ऐसा प्रतीत होता है कि उन्हें बड़ी-बड़ी आँखें, सीधी नाक, उन्नत एवं सुडौल ललाट, पतले अधर, गोरा परन्तु थोड़ा-सा सांवला रंग, गोल चेहरा, लंबे-लंबे बाल, लम्बी बरौनियां, ठोडी के बीच का गड्ढा आदि अत्यंत प्रिय हैं। अंगों के वर्णन में उनके प्रमुख गुणों जैसे- सुडौलता, स्निग्धता, कोमलता, मृदुलता, पुष्टता, सुकुमारता, सुन्दरता, उन्नतता, गर्वीलापन,दीप्ति रंग, कद एवं आकृति का भी विशेष ध्यान रखा गया है। वस्तुतः कहा जा सकता है कि वर्मा जी ने नारी के स्थिर बाह्य रूप में स्वाभाविकता को संजो दिया है, जिसमें अश्लीलता के लिए कोई स्थान नहीं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. वृंदावनलाल वर्मा, गढ़ कुम्हार, पृ॰ 44
2. वही, पृ॰ 46
3. वही, ललितादित्य, पृ॰ 13
4. भुवन विक्रम, पृ॰ 3
5. वही, पृ॰ 2
6. कचनार, पृ॰ 3
7. वही, पृ॰ 23-24
8. महारानी दुर्गावती, पृ॰ 13
9. विराटा की पद्मिनी, पृ॰ 245
10. वही, पृ॰ 246

Corresponding Author

Sunil Kumar*

Village & Post – Khanda Kheri, Hisar